B.A. (PHILOSOPHY)
PROGRAMME OUTCOMES

After successful completion of "Three Year Degree Program" in Philosophy, student is be able to:

- दर्शनशास्त्र, धर्मदर्शन, नीतिशास्त्र, समाज दर्शन जैसे अवधारणाओं की स्पष्ट समझ।
- भारतीय दर्शन तथा पाश्चात्य दर्शन में मूलभूत अंतर का ज्ञान।
- सृष्टिवाद और विकासवाद के अवधारणाओं में स्पष्टता।
- सोचने और समझने के दृष्टिकोण में विकास।
- समझकर एवं विवेकपूर्ण लिखने की क्षमता का विकास।
- भारतीय दर्शन तथा पाश्चात्य दर्शन के विचारकों के सामान्य विचारों एवं सिद्धांतों की समीक्षात्मक समझ आना।
- समीक्षात्मक दार्शनिक दृष्टिकोण का विकास होना।

PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES (PART I): After completion of one year syllabus, students are able to get:-

- दर्शनशास्त्र के संप्रत्यय की समझ।
- भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन में अंतर की स्पष्टता का ज्ञान तथा समझ।
- दार्शनिक एवं सामाजिक सम्प्रत्यय की स्पष्टता का ज्ञान। जैसे–ईश्वर, आत्मा, विश्व इत्यादि।
- सृष्टिवाद और विकासवाद के अवधारणाओं का ज्ञान तथा समझ।
- ज्ञानमीमांसीय, तत्वमीमांसीय, ईश्वर संबंधी सिद्धान्त का ज्ञान एवं समझ।
- आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों का ज्ञान तथा समझ।

COURSE OUTCOME /STUDENT LEARNING OUTCOME: After successful completion of course Paper-I (Indian Philosophy), students are able to:

- भारतीय दर्शन की आधारभूत रूप की समझ।
- भारतीय दर्शन के अनुसार आस्तिक और नास्तिक में अंतर का ज्ञान एवं समझ।
- जैन दर्शन के जीव, द्रव्य, स्यादवाद जैसे सप्रत्ययों तथा सिद्धान्त की समझ।
- बौद्ध दर्शन के चार आर्य सत्य का ज्ञान तथा समझ में विकास।
- प्रमाणमीमांसा ज्ञान की समझ।
- सांख्य दर्शन के सत्यकर्यवाद, प्रकृति, पुरूष, बंधन एवं मुक्ति से संबंधी विचार का ज्ञान।
- योग दर्शन के आष्टांगमार्ग की समझ।
- शंकराचार्य एवं रामानुचार्य के दर्शन–ब्रह्म, विश्व, आत्मा का समान्य ज्ञान एवं समझ।

COURSE OUTCOME /STUDENT LEARNING OUTCOME: After successful completion of course Paper-II (Metaphysics and Epistemology) , students are able to:-

- दर्शन के स्वरूप का ज्ञान एवं समझ।
- भौतिकवाद, प्रत्ययवाद, अनुभववाद, एकात्मवाद, द्वैतवाद, अनेकवाद जैसे तत्वमीमांसीय सिद्धान्त की ज्ञान एवं समझ।
- बुद्धिवाद, अनुभववाद, समीक्षावाद, वस्तुवाद, प्रत्ययवाद जैसे ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त की समझ।
- अनेकेश्वरवाद, केवल निमितेश्वरवाद, ईश्वरवाद जैसे ईश्वर संबंधी सिद्धान्त की समझ।

PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES (PART-II): After completion of one year syllabus, students are able to get:-

- नीतिशास्त्र एवं उसके नैतिक प्रत्ययों का ज्ञान एवं समझ।
- नैतिकता की आवश्यकता की समझ।
- भारतीय नीतिशास्त्र की समझ।
- पाश्चात्य दर्शन के विचारकों एवं उनके विचारों का सामान्य ज्ञान एवं समझ।
- आधुनिक पाश्चात्य विचारक देकार्त, लॉक, एवं कांट जैसे विचारकों के विचारों से अवगत एवं उनके सिद्धातों के विचारों से अवगत एवं उनके सिद्वान्तों की समझ।
- नैतिक के मापदण्ड एवं दंड के सिद्धान्त का ज्ञान एवं समीक्षात्मक समझ में वृद्वि।

COURSE OUTCOME /STUDENT LEARNING OUTCOME: After successful completion of course Paper-III (Ethics), students are able:-

- नीतिशास्त्र के स्वरूप का ज्ञान एवं समझ।
- उचित, शुभ, कर्तव्य, दायित्व जैसे नैतिक प्रत्ययों की समझ।
- नैतिक कर्म एवं नीतिशून्य कर्म का ज्ञान एवं समझ।
- नैतिक मान्यता के स्वरूप का ज्ञान।
- नैतिक प्रयोजन के विषय- प्रयोजन एवं अभिप्राय का ज्ञान एवं समझ।
- बाह्य नियम, बुद्धिवाद, अन्तःप्रज्ञावाद आत्मपूर्णतावाद जैसे नैतिकता के मापदंड का ज्ञान एवं दार्शनिक समीक्षात्मक समझ।
- प्रतिकारवाद, सुधारवाद जैसे दंड के सिद्धान्त का ज्ञान एवं दार्शनिक समीक्षात्मक समझ।
- वर्णाश्रम, पुरूषार्थ, गीता की नीति का ज्ञान एवं समझ।

COURSE OUTCOME /STUDENT LEARNING OUTCOME: After successful completion of course paper IV (western Philosophy), students are able:-

- पाश्चात्य दर्शन के इतिहास एवं इसके विचारकों के विचारों और सिद्धान्तों की समझ।
- देकार्त के सिद्धान्त- आत्मा का स्वरूप, ईश्वर, गुण , विस्तार, विश्व, द्रव्य विचार, मन और शरीर का संबंध का ज्ञान एवं समझ।
- स्पिनोजा के सिद्धान्त विस्थापन, द्रव्य, गुण, मन और शरीर के संबंध का ज्ञान एवं समझ।
- लॉक के जन्मजात प्रत्ययों का खंडन, सरल मिश्रित प्रत्यय, द्रव्य विचार का ज्ञान एवं समझ।
- बर्कले के सता अनुभवमूलक है-का ज्ञान एवं समझ।
- ह्यूम के संस्कार तथा प्रत्यय, कार्य कारण तथा संदेहवाद का ज्ञान एवं समझ।
- कांट के ज्ञान की रचना, संदेहवाद का ज्ञान एवं समझ।

PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES (PART III) :After completion of one year syllabus, students are able to get:

- धर्म के दार्शनिक दृष्टिकोण का विकास।
- समाज दर्शन के अंतर्गत सामाजिक जाति, वर्ग, विवाह, तलाक, सम्पति, परम्परा, आधुनिकता का दार्शनिक समीक्षात्मक ज्ञान एवं समझ में वृद्धि होना।
- राजनीतिक दार्शनिक समीक्षात्मक दृष्टिकोण का आना एवं समझ की वृद्धि होना।
- सामाजिक, धर्म एवं दार्शनिक धर्म का ज्ञान एवं समझ।
- भारतीय ज्ञानमीमांसा की समझ।
- प्रतिकात्मक तर्कशास्त्र का ज्ञान एवं समझ।
- समकालीन भारतीय दर्शन का सामान्य ज्ञान एवं समझ प्राप्त होना।

COURSE OUTCOME /STUDENT LEARNING OUTCOME: After successful completion of course paper V (Philosophy of Religion), students are able to:

- धर्म के स्वरूप का ज्ञान तथा धर्म का धर्म दर्शन से संबंध का समझ प्राप्त होना।
- धर्म के संबंध में दार्शनिक दृष्टिकोण की समझ।
- आस्था, विश्वास, धार्मिक तर्क की समझ
- धार्मिक सिद्धान्त की समझ।
- ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में विभिन्न प्रमाणों का ज्ञान एवं समझ।
- विश्व में अशुभ की समस्या का तार्किक ज्ञान एवं समझ।
- धार्मिक भाषा एवं उसके अर्थ की समझ।

COURSE OUTCOME /STUDENT LEARNING OUTCOME: After successful completion of course, paper VI (Social and Political Philosophy), students are able to:

- समाज दर्शन के स्वरूप का ज्ञान एवं समझ।
- सामाजिक परिवर्तन, परंपरा और आधुनिकता का ज्ञान एवं समझ।
- जाति, वर्ग, विवाह-तलाक जैसे सामाजिक सम्प्रत्ययों की समाजिक समझ में वृद्धि।
- राजनीति दर्शन के स्वरूप का ज्ञान एवं समझ।
- अधिकार, कर्तव्य, न्याय जैसे राजनैतिक सम्प्रत्ययों की राजनैतिक एवं दार्शनिक समझ में वृद्धि।
- राजनैतिक सिद्धान्त का ज्ञान एवं समझ।

COURSE OUTCOME /STUDENT LEARNING OUTCOME: After successful completion of course, paper-VII (Symbolic Logic and Indian Epistemology), Students are able to:

- तर्कशास्त्र एवं प्रतिकात्मक तर्कशास्त्र की समझ।

- सत्य-असत्यता, वैद्यता-अवैद्यता के नियमों की समझ।
- युक्ति तथा युक्तिआकार का ज्ञान एवं समझ।
- भारतीय तर्कशास्त्र तथा उसके प्रमाण प्रत्यय, अनुमान, शब्द और उपमान का ज्ञान एवं समझ में वृद्धि।

COURSE OUTCOME /STUDENT LEARNING OUTCOME: After successful completion of course, paper VIII (Contemporary Indian Philosophy), Students are able to:

- महात्मा गांधी के दार्शनिक विचारों ईश्वर, सत्याग्रह, धर्मनिरपेक्षता का ज्ञान एवं समझ।
- रविन्द्रनाथ टैगोर के दार्शनिक विचारों की समझ में वृद्धि।
- श्री अरविन्दों के सचिदानंद, डिवाइन लाइफ जैसे दार्शनिक विचारों की विस्तृत ज्ञान एवं समझ।
- स्वामी विवेकानंद के ईश्वर, विश्व, धर्म, योग से संबंधी विचारों का ज्ञान एवं समझ।